लग्न जातकम् - Edited with the Commentary in Hindi by पं० नारायण प्रसाद मुकुन्दराम.
मुम्बई, 1967 Vikram era.

1297

(6)

(7)

~~[illegible]~~

1 copy

Bill No. 3/07-08

43
2008-0195

॥ श्रीः ॥

ज्योतिर्वित्पण्डित नारायणप्रसाद मुकुन्द

रामाभ्यां सम्पादितम्

# लग्नजातकम् ।



भाषाटीकासमन्वितम्

तच्च



पं० श्रीधर शिवलालात्मज

श्रीकृष्णलालेन

मुम्बय्यां

स्वकीय ज्ञानसागर यंत्रालये मुद्रितम्

संवत् १९६०

श्रीः ॥

ज्योतिर्वित्पण्डित नारायणप्रसाद मुकुन्द रामाभ्यां सम्पादितम्

# लग्नजातकम् ।

भाषाटीकासमन्वितम्

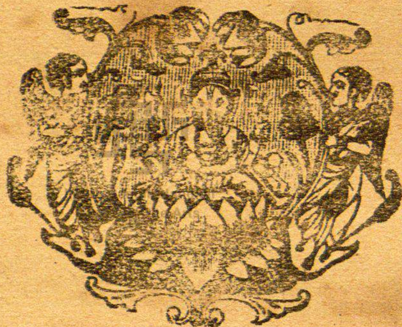
तच्च

पं० श्रीधर शिवलालात्मज श्रीकृष्णलालने

मुम्बय्यां

स्वकीय ज्ञानसागर यंत्रालये मुद्रितम् ।

संवत् १९६०.





॥ श्री ॥

# लग्नजातक ।

## भाषाटीकासहित.



मूल–तुलालिकुम्भोजकुलीरलग्ने वेद्यं प्रसूता गृहपूर्वद्वारे ॥ कन्याधनुर्मीननृयुग्मलग्ने स्यादुत्तरद्वारि प्रतीचिगोरथः ॥ १ ॥

भाषार्थः–जन्मसमय जो तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मेष, कर्क ये लग्न हों, तो प्रसूताके घरका द्वार पूर्वमुखका जानना; कन्या, धन, मीन, मिथुन इन लग्नोंमें बालकका जन्म हो तो जच्चाका गृहद्वार उत्तर मुखका जानना; वृषलग्नमें पश्चिम मुखका कहना ॥ १ ॥

मू०–मृगारिलग्ने मकरे तथापि भवेत्प्रसूता गृहदक्षिणस्याम् ॥ एवं हि लग्नात्परिचिन्तनीयं सूतीगृहद्वारमिदं प्रदिष्टम् ॥ २ ॥

भाषार्थः—सिंह, मकर, लग्नमें प्रसूता ( जच्चा ) का घर दक्षिण मुखका होताहै, ऐसे तात्कालिक लग्नसे सूतिकाके घरका द्वार निश्चय करके कहना चाहिये॥२॥

मू०—मेषालिकर्कघटकुम्भजऐन्द्रभागे जीवज्ञवेश्मनि तथोत्तरभागके च ॥ नक्रे हरौ यमदिशासु वृषे प्रतीच्यां तद्वास्तुनीति वसतिं प्रवदेत्प्रसूत्याः ॥ ३ ॥



भाषार्थः—मेष, वृश्चिक, कर्क, तुला, कुम्भ ये राशि लग्नमें हों अथवा इनका नवांश जन्मसमय हो तो वास्तुसे पूर्वभागमें जन्म कहना, और धन, मीन, मिथुन, कन्या ये लग्नमें हों अथवा इनके नवांश जन्मसमय हो तो वास्तुसे उत्तर भागमें; तथा मकर व सिंह लग्नमें हो अथवा इनका नवांश हो तो वास्तुसे दक्षिण भागमें; वृषलग्न हो वा वृषका नवांश हो तो वास्तुसे पश्चिम ओर सूतिका घर कहना ॥ ३ ॥

मू०—मीने मेषे च द्वे भार्ये चत्वारि वृषकुम्भ-

योः ॥ मकरे मिथुने पंच बाणाश्च धनकर्कयोः ॥
अन्यलग्ने भवेत्रीणि प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ ४ ॥

भाषार्थः–मीन और मेषलग्नमें जन्म हो तो दो स्त्री सूतिकाके निकट कहना. वृष, कुम्भ लग्नमें जन्म हो तो चार स्त्री सूतिका स्त्रीके समीप कहना. मकर, मिथुनमें पांच स्त्री, और धन कर्क लग्नमेंभी पांच स्त्री कहना. अन्य ( सिं० क० तु० वृश्चि० ) लग्नोंमें जन्म हो तो तीन उपसूतिका प्रसूता ( जच्चा ) के समीप हों ऐसे पंडितजन कहतेहैं ॥ ४ ॥

मू०–लग्नचन्द्रान्तर्गतस्थैर्ग्रहैस्तत्रोपसूतिकाः ॥
बहिरन्तश्च चक्रार्द्धे दृश्यादृश्येऽन्यथापरे ॥ ५ ॥

भाषार्थ· जन्मसमय लग्न और चन्द्रमाके बीचमें जितने ग्र, विद्यमान हों उतनी स्त्री सूतिकाके समीप कहना, और चक्रार्द्ध अर्थात् लग्नसे सातवें स्थान पर्यन्त जितने ग्रह स्थित हों उतनी स्त्रियां समीप भीतर जानना, तथा आठवें स्थानसे बारहवें स्थान पर्यन्त जितने ग्रह होवें उतनी स्त्रियां सूतिकाके घरसे बाहर होंगी ॥५॥

मू०-अंगे चन्द्रे ग्रहमात्रादृष्टे निर्जने प्रसवः ॥

भाषार्थ-लग्नमें चंद्रमा हो और कोईभी ग्रह देखता न हो तो जन्मसमय वहां कोई नहीं ऐसा कहना ॥

मू०-स्वोच्चवक्रोपगैस्त्रिघ्नाः स्वस्थैर्द्विघ्नास्तदंशगैः ॥ तथैव ग्रहतुल्यं स्याद्वयो जातिस्वरूपकैः ॥ ६ ॥

भाषार्थः-अपनी उच्च राशिमें वक्र गतिसे जितने ग्रह हों उनकी तिगुनी स्त्रियां कहनी, अपनी राशिमें व अपने नवांशमें अपने द्रेष्काण व अपने वर्गोत्तममें जितने ग्रह हों उनकी दुगुणी स्त्रियां, प्रसूता स्त्रीके समीप कहनी चाहिये, और उन उपसूतियोंकी अवस्था, जाति, स्वरूप उन ग्रहोंके सदृश कहना, ग्रहोंका स्वरूप आदि आगे वर्णन करेंगे ॥ ६ ॥



मू०-पापैश्च विधवा नारी क्रूरैरपि कुमारिका ॥ सौम्यग्रहैश्च सुभगा सूतिकायां विधीयते ॥ ७ ॥

भाषार्थः—पापग्रहोंकरके विधवा स्त्री, क्रूरग्रहोंकरके कुमारी, और शुभग्रहोंके योगसे सौभाग्यवाली अर्थात् सुहागिन स्त्री, इनकी संख्या सूतिकाके समीप कहना ७

**मू०—बालां पूर्णः शीतगुः सोमजोऽपि वृद्धां सौरिः कर्कशां भूमिपुत्रः ॥ वादित्येज्यौ सुप्रसूतां भृगुश्च कुर्वाते स्त्रीं कर्कशां चापि वृद्धाम् ॥ ८ ॥**

भाषार्थः—लग्न और चन्द्रमाके बीच ग्रहोंके योगसे जो उपसूतिका ज्ञान कहा,सो पूर्ण चन्द्रमा और बुध हो तो बाला स्त्री,शनि हो तो वृद्धा,मंगल हो तो कलहकरनेवाली स्त्री, सूर्य वा बृहस्पति हों तो सुन्दर सन्तानवाली स्त्री, शुक्र हो तो कलह जिसको प्यारा ऐसी स्त्री और वृद्धाभी स्त्री कहना "आषोडशाद्भवेद्बाला तरुणी त्रिंशका मता। पंचपंचाशका प्रौढा नारी वृद्धा ततःपरम्"॥सोलह वर्ष पर्यन्त बाला, तीसतक तरुणी, पचपन वर्षकी प्रौढा, उपरान्त स्त्री वृद्धा हो जातीहै ॥ ८ ॥

**मू०—शब्दो मेषे वृषे सिंहे मिथुने वा तथा तुले ॥**

घटकन्ययोरर्धशब्दः शेषाः शब्दविवर्जिताः ॥ ९ ॥

भाषार्थः—जन्मसमयमें जो मेष, वृष, सिंह, मिथुन तथा तुला इन लग्नोंमें जन्म हो तो बालकने शब्द किया अर्थात् बालक रोया और कुम्भ, कन्या, लग्न हों तो आधा शब्द किया अर्थात् कुछ रोकर चुप रहा. शेष लग्न (कर्क, वृश्चिक, धन, मकर, मीन ) हों तो बालक रोया नहीं ऐसा कहना ॥ ९ ॥

सू०—मेषत्रिपंचाननतौलिलग्ने विस्मृत्य सर्वं बहु रोदिति स्म ॥ स्वल्पं घटे स्त्रीशिशुरन्यलग्नेरुद्यन्ति नो ज्ञानबलस्य सत्वात् ॥ १० ॥

भाषार्थः—मेष, मिथुन, सिंह, तुला इन लग्नोंमें बालकका जन्म हो तो वह बालक सब ज्ञानको भूलकर बहुत रोता है और कुंभ व कन्या लग्नमें उत्पन्न बालक थोडा रुदन करता है. अन्य ( शेष ) लग्नों (वृष, कर्क, वृश्चिक, धन, मकर, मीन ) में उत्पन्न बालक ज्ञानबलके प्रभावसे बहुत नहीं रोताहै ॥ १० ॥

मू०–मेषे सिंहे धनुःकर्के कन्यामीने तथा तुले ॥ अन्तरिक्षं भवेज्जन्म शेषे भूमिर्निगद्यते।११।

भाषार्थः–मेष, सिंह, धनु, कर्क, कन्या, मीन तथा तुला इन लग्नोंमें जन्म हो तो शय्यापर जन्म कहना और शेष लग्नोंमें ( वृष, मिथुन, वृश्चिक,मकर, कुम्भ ) में बालक उत्पन्न हो तो पृथिवीपर जन्म कहना ११

मू०–द्वौ द्वौ क्रियादिन्द्रमुखादि दिक्षु द्विमूर्तयः कोणगता भवन्ति ॥ यो जन्मकाले सति लग्नवर्ती तद्दिग्गतं स्याच्छयनं प्रसूत्याः ॥ १२ ॥

भाषार्थः–मेषसे दोदो राशि जन्मलग्न हों तो यथाक्रमसे पूर्व आदि चारोंदिशाओंमें; द्विःस्वभावराशि लग्नमें हो तो यथाक्रमसे आग्नेय आदि कोणोंमें; सूतिकाका शयनस्थान कहना अर्थात् मेष,वृष,लग्नसे घरके पूर्वमें; मिथुन लग्नसे आग्नेय कोणमें; कर्क, सिंह लग्नसे दक्षिणमें; कन्या लग्नसे नैऋत्यमें; तुला, वृश्चिक लग्नसे पश्चिममें; धन लग्नसे वायव्यमें; मकर, कुम्भ लग्नसे

उत्तरमें; मीन लग्नसे ईशान कोणमें; सूतिकाका शयनस्थान कहना ॥ १२ ॥

**अथवा उक्तं च बृहज्जातके मू०—प्राच्यादिगृहे क्रियादयो द्वौ द्वौ कोणगता द्विमूर्तयः ॥ शय्यास्वपि वास्तुवद्वदेत्पादैः षट्त्रिनवान्त्यसंस्थितैः ॥ १३ ॥**

भाषार्थः—दो बातोंका विचार इस श्लोकद्वारा करना-प्रथम यह बालकका जन्म घरके किस भागमें हुआ है, दूसरे यह कि शय्याका शिराहना किस ओरको है, सो विचार ऐसे करना कि, मेष, वृषसे पूर्व; मिथुनसे अग्नि कोणकी ओर; कर्क, सिंहसे दक्षिण; कन्यासे नैर्ऋत्यकोण, तुला, वृश्चिकसे पश्चिम; और धनसे वायुकोण; मकर, कुम्भसे उत्तर; मीनसे ईशानकोणकी ओर जन्म व शय्याका शिराहना कहना, यहां छटे, तीसरे, नवें, बारहवें स्थानसे शय्याके चारोंपाये कहना अर्थात् बारहवें स्थानसे शिराहनेका बायां पाया, छठे घरसे

शय्याके पायंतेका दहिना पाया, नवेंसे बायां पाया, तीसरे घरसे शिराइनेका दहिना पाया, जहां पापग्रह निर्बल हों वहांपर प्रसूतिका घर वा शय्याका अंग बलहीन, व टूटा चिटका जानना और जहां शुभ ग्रह बलवान् हों वहां पुष्ट और सुन्दर कहना, मिश्रित होनेसे सामान्य कहना ॥ १३ ॥

मू०–छागसिंहे वृषे लग्ने वृश्चिके नालवेष्टितः ॥
नृलग्ने दक्षिणे पार्श्वे वामे स्त्रीलग्नके तथा ॥ १४ ॥

भाषार्थः–मेष, सिंह, वृष, वृश्चिक इन लग्नोंमें बालकका जन्म हो तो नाल लिपटा हुआ जन्म कहना पुरुषलग्नसे दाहिनी और तथा स्त्री ( सम ) लग्नसे बांई ओर लिपटा कहना ॥ १४ ॥

मू०–छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थे मन्देऽथवा कुजे ॥ राश्यंशसदृशे गात्रे जायते नालवेष्टितः ॥ १५ ॥

भाषार्थः–जो मेष, सिंह, वृष इन लोग्नोंमें जन्म हो

और लग्नमें शनि वा मंगल स्थित हो तो लग्नस्थित नवांशककी राशिके अंगमें नाल लिपटा हुवा कहना.अंगका ज्ञान नीचे लिखे चक्रसे जानना; परन्तु जिस लग्नमें बालकका जन्म हो वह शिर जानना इत्यादि॥ १५॥

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| शिर | मुख | बाहु | हृदय | उदर | कटि | बस्ति | लिंग | ऊरू | जानु | जंघा | चरण |

मू०–यत्र राहुस्तत्र शिरो मंगले भूमिखंडनम्॥
रविस्थाने भवेद्दीपः शनौ लोहं निगद्यते॥ १६॥

भाषार्थः–जन्मसमय लग्नसे जहां राहु स्थित हो उस दिशामें बालकका शिर कहना, जिस दिशामें मंगल हो वहांपर भूमि खंडित अथवा गढ्ढा कहना, जहां सूय हो उस दिशामें दीपक कहना, जहां शनि स्थितहो वहां लोहेकी स्थिती कहना, ऐसे अपनी मतिके अनुसार कहना, यहां जन्म लग्नको पूर्वदिशा, चौथे स्थानको उत्तर दिशा, दशवें स्थानको दक्षिण दिशा,सातवें स्थान-

को पश्चिम दिशा कल्पना करके चारों कोणभी जान-
लेना, यहां कोई ऐसाभी कहतेहैं कि सूर्य रात्रिदिनमें
पूर्व आदि आठों दिशाओंमें घूमताहै उस समय
संचारबशसे जिस दिशामें सूर्य हो उस दिशामें
दीपक कहना ॥ १६ ॥

मू०—चन्द्रात्तैलज्ञानमेवं विचार्य बुद्धयात्सर्वं सूतिकावेश्मनीह ॥ लग्नारम्भे वर्तिका पूर्णदेहा मध्ये त्वर्द्धा स्वल्पशेषाऽवसाने ॥ १७ ॥

भाषार्थः—चन्द्रमासे दीपकके तेलका विचार करना. चन्द्रमा पूर्ण हो तो दीपकमें तेल भराहुआ कहना. मध्यम हो तो आधा, क्षीण चन्द्रमा हो तो थोडा अथवा चन्द्रमाके अंशोंके अनुसार कहना, पूर्ण दीपकमें जितने २ अंश चन्द्रमाके न्यून होते जाँयं उतनाही तैल न्यून होता जायगा, इसप्रकार अपनी बुद्धिसे सूतिकाके घरमेंका सब विचार करना, लग्नसे दीपककी बत्तीका विचार करना, सो ऐसे कि, लग्नके आरम्भमें जन्म

हो तो बत्ती पूर्ण जानना अर्थात् बत्ती उसी समय जलाईगई, आधी लग्न व्यतीत हो जानेपर आधी बत्ती और थोडे अंश शेष रहगये हों अर्थात् लग्नके अंतमें कुछ बत्ती रहगई ऐसा कहना ॥ १७ ॥

मू०—चरर्क्षगे रवौ तदा चरं प्रदीपकं वदेत् ॥
स्थिरर्क्षभे स्थिरं वदेद्द्विदेहभे द्विधा तदा ॥ १८ ॥

भाषार्थः--चरराशिमें सूर्य हो तो दीपक चलायमान रहा ऐसा कहना, स्थिर राशिमें सूर्य हो तो दीपक एक स्थानमें स्थित रहा, द्विःस्वभाव राशिमें सूर्य हो तो चरस्थिर अर्थात् एक स्थानसे उठाकर दूसरे स्थान पर रख दिया गया ॥ १८ ॥

मू०—चरलग्ने चरो दीपः स्थिरे स्वस्थानसंस्थितः ॥ द्विदेहभे करस्थःस्यादिति केचिद्बुधाजगुः ॥ १९ ॥

भाषार्थ--चर लग्नमें जन्म हो तो दीपक चलायमान रहा, स्थिर लग्न हो तो अपने स्थानमें स्थित रहा,

द्विःस्वभावराशिमें हाथमें दीपक रहा, ऐसा कोई पण्डितोंने कहाहै ॥ १९ ॥

मू०–राश्यादिके चन्द्रमसि प्रदीपस्तैलेन पूर्णोऽस्ति वदेद्बुधाग्र्यः ॥ तथैवमध्यान्तगते शशांके मध्यत्वमल्पत्वमुपैति दीपः ॥ २० ॥

भाषार्थः–समाधानके अर्थ फिरभी तैलज्ञान कहते हैं॥ राशिके आदिमें अर्थात् दश अंशके भीतर चन्द्रमा हो तो तेलसे परिपूर्ण दीपक कहना, ऐसेही राशिके मध्यमें अर्थात् ग्यारह अंशसे वीस अंशके भीतर चन्द्रमा हो तो दीपकमें आधा तेल कहना, राशिके अन्तमें अर्थात् इक्कीस अंशसे तीस अंशके भीतर चन्द्रमा हो तो पण्डितजन दीपकमें तेल थोडा कहै ॥ २० ॥

मू०–शीर्षोदयेविलग्ने मूर्धाप्रसवोन्यथोदये चरणौ ॥ उभयोदये च हस्तौ शुभदृष्टः शोभनोऽन्यथा कष्टः ॥ २१ ॥

भाषार्थः–शीर्षोदय लग्नमें जन्म हो तो शिरसे और

पृष्ठोदय लग्नमें जन्म हो तो चरणोंसे, उभयोदयलग्नमें जन्म हो तो हाथोंसे जन्म कहना, शिरसे जन्म होना यह कि प्रथम शिर बाहरको निकलै, यहां सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मिथुन, कुम्भ ये शीर्षोदय राशिहैं, मीन, उभयोदय है, शेष मेष, वृष, कर्क, धन, मकर ये पृष्ठो दय राशि हैं, लग्नपर शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो कष्टसे जन्म कहना ॥ २१ ॥

मू०—पितुर्जातः परोक्षेऽस्य लग्नमिन्दावपश्यति ॥
विदेशस्थस्य चरमे मध्याद्भ्रष्टे दिवाकरे॥२२॥

भाषार्थः—जो जन्मसमय लग्नको चन्द्रमा नहीं देखै, तो उससमयके उत्पन्न हुये बालकका जन्म पिताके परोक्ष ( पीछे ) कहना और मध्यमसे भ्रष्ट, अर्थात् दशवें स्थानसे रहित ( नवम, अष्टम, एकादश, द्वादश ) स्थानोंमें सूर्य चर राशिका हो तो बालकके जन्मसमय पिता विदेशमें स्थित कहना ॥ २२ ॥

मू०—स्थिरे सूर्येऽष्टमे धर्मे लाभे वा चान्त्यसं-

स्थिते ॥ न पश्येच्चन्द्रमा लग्नं परोक्षे जायते शिशुः ॥ २३ ॥

भाषार्थः--सूर्य स्थिरराशि, आठवें, नवें, ग्यारहवें, बारहवें,स्थानमें हों तो और चन्द्रमा लग्नको न देखता हो तोभी पिताके पीछे बालकका जन्म कहना;परन्तु अपने देशमें स्थित परोक्ष कहना ॥ २३ ॥

मू०—उदयस्थेऽजि वा मन्दे कुजे वाऽस्तं समागते ॥ स्थिते वान्तः क्षपानाथे शशाङ्कसुतशुक्रयोः ॥ २४ ॥



भाषार्थः—अथवा जन्मलग्नमें शनैश्वर हो, यद्वा सप्तम स्थानमें मंगल हो,किंवा बुध और शुक्रके मध्यमें चन्द्रमा स्थित होवै,तो इन तीन योगोंमें पिताके पीछे बालकका जन्म कहना ॥ २४ ॥

मू०—क्रूरर्क्षगतावशोभनौ सूर्याद्द्यूननवात्मजस्थितौ ॥ बद्धस्तु पिता विदेशगः स्वेवा राशिवशादथो पथि ॥ २५ ॥

भाषार्थः--जो पापग्रह क्रूरराशि ( मेष,सिंह,वृश्चिक, मकर, कुंभ, ) में सूर्यसे सातवें, नवें पांचवें स्थानमें स्थित हो तो बालकका पिता बन्धनमें कहना,यहां जो सूर्य चर राशिमें स्थित हों तो परदेशमें,स्थिर राशिमें हो तो अपनें देशमें और द्विःस्वभाव राशिमें हो तो मागम बँधा कहना ॥ २५॥

मू०—मेषे रक्तं वृषे श्वेतं मिथुने नीलवर्णक-
म् ॥ कर्कटे श्वेतरक्तं च सिंहे धूम्रं च पाण्डुरम्
॥ २६ ॥ कन्याविचित्रवर्णं च तूले धूम्रं प्रकीर्ति-
तम् ॥ पिशंगो वृश्चिके ज्ञेयः पिंगलो धनुषस्तथा
॥२७॥ कर्बुरो मकरे ज्ञेयो बभ्रुवर्ण घटे वदेत् ॥
मीनवर्ण झषे ज्ञेयो राशिवर्णान् वदेद्बुधः॥२८॥

भाषार्थः--मेषका लालरंग, वृषमें सपेदरंग मिथुनमें नीलरंग कर्कमें सपेद और लालरंग, सिंहमें धम्र और पाण्डुवर्ण॥२६॥कन्यामें विचित्र वर्ण अर्थात् अनेक रंग और तुलामेंधूआँकासा रंग, वृश्चिकमें पीला रंग, धनुमें

पीला रंग, तथा ॥ २७ ॥ मकरमें कवरा अर्थात दो रंग मिलाहुआ अथवा काला सपेद रंग जानिये; कुम्भमें न्यौलाकासा रंग कहना, मीनमें मछलीकासा रंग जानना, यह राशियोंका रंग पण्डितजन जानै इसका प्रयोजन यहां यह है कि प्रसूता स्त्रीके भोजनका रंग लग्नद्वारा बतावै, कोई पण्डित प्रसूताके वस्त्रका रंगभी राशिवर्णद्वारा बतलाते हैं बुद्धिद्वारा यथायोग्य विचार करके बतलाना ॥ २८ ॥



मू०–न लग्नमिन्दुं न गुरुर्निरीक्षिते न वा शशांकं रविणा समागतम् ॥ स पापकोऽर्केण युतोऽथ वा शशी परेण जातं प्रवदन्ति निश्चयात् ॥ २९ ॥

भाषार्थः–जो लग्न और चन्द्रमाको बृहस्पति नहीं देखता हो,अथवा चन्द्रमा सूर्यके साथ हो और बृहस्पतिकी दृष्टि न हो, अथवा सूर्य चन्द्रमा यह दो हों, पापग्रह (शनि, मंगल) से युक्त हों तो निश्चय करके

उस बालकका जन्म अन्य (दूसरे) से होवै, ऐसा कह-
तेहैं, परन्तु यह जारजात विषय विचार करना विशेष
नहीं इसकारण यहां केवल एक योग लिखकर विशेष
परीक्षा तथा बालकके चिन्ह कहते हैं॥ २९॥

मू०-आप्योदयमाप्यगः शशी सम्पूर्णं स-
मवेक्ष्यतेऽथवा ॥ मेषूरणबन्धुलग्नगः स्यात्प्रसूतिः
सलिले न संशयः ॥ ३० ॥

भाषार्थः-जन्मलग्न और चन्द्रमा, जलचरराशि-
में हो अथवा पूर्ण चन्द्रमा, लग्नको पूर्ण दृष्टिसे देखै,
अथवा चन्द्रमा जलचरराशिका दशवें, चौथे व लग्नमें
होतो बालकका जन्म जलके ऊपर कहना॥ ३०॥

मू०-पूर्णे शशिनि स्वराशिगे सौम्ये लग्नगते
गुरौ सुखे ॥ लग्ने जलजेऽस्तगेऽपि वा चंद्रे पो-
तगते प्रसूयते ॥ ३१ ॥

भाषार्थः-पूर्ण चन्द्रमा अपनी राशि ( कर्क ) में हो,
बुध लग्नमें हो, बृहस्पति चौथे स्थानमें हो अथवा लग्नमें

जलचरराशि हो, चन्द्रमा सातवें हो, तो बालकका जन्म नौकामें वा पुलके ऊपर कहना ॥ ३१ ॥

मू०–उदयोडुपयोर्व्ययस्थिते गुप्त्याम्पापनिरीक्षिते शनौ ॥ अलिकर्कयुते विलग्नगे सौरौ शीतकरेक्षितेऽवटे ॥ ३२ ॥

भाषार्थः–लग्न और चन्द्रमासे बारहवें स्थानमें शनि हो और पापग्रह देखते हों, तो बालकका जन्म कारागारमें कहना तथा वृश्चिक,कर्कका शनैश्चर लग्नमें हो और चन्द्रमा देखता हो तो खाई वा खातामें जन्म कहना ॥ ३२ ॥

मू०–मन्देऽब्जगते विलग्नगे बुधसूर्येन्दुनिरीक्षिते क्रमात् ॥ क्रीडाभवने सुरालये प्रवदेज्जन्म च सोषरावनौ ॥ ३३ ॥

भाषार्थः–जो शनि जलचरराशिमें स्थित होकर लग्नमें हो और बुधकी दृष्टि हो तो नृत्यशालामें,तथा जो शनैश्चरपर सूर्यकी दृष्टि हो तो देवालयमें, चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो ऊषर भूमिमें जन्म हुआ जानना ॥ ३३ ॥

मू०–नृलग्नगं प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने रम्ये सितेन्दू गुरुरग्निहोत्रे॥रविर्नरेन्द्रामरगोकुलेषु शिल्पालये ज्ञः प्रसवं करोति ॥ ३४ ॥

भाषार्थः–नरराशिमें स्थित शनि लग्नमें होवै और मंगल देखता हो तो श्मशानमें जन्म कहना, और नरलग्नगत शनिको शुक्र चन्द्रमा देखता हो, तो सुन्दर दर्शनयोग्य रमणीक घरमें बालकका जन्म कहना बृहस्पति देखता हो तो हवन मन्दिरमें जन्म कहना सूर्य देखता हो तो राजमन्दिर वा देवालय वा गोशालामें जन्म कहना, बुध देखता हो तो शिल्पालय ( चित्रकारी व कारीगरीसे बनेहुये स्थान ) में जन्म कहना ॥ ३४ ॥

मू०–राश्यंशसमानगोचरे मार्गे जन्मचरे स्थिरे गृहे ॥ स्वर्क्षांशगते स्वमन्दिरे बलयोगात्फलमंशकर्क्षयोः ॥ ३५ ॥

भाषार्थः–जन्म समय लग्नराशिनवांशके समान हो तो

भूमिमें बालकका जन्म कहना, चरराशि नवांशमें बालक उत्पन्न हो तो मार्गमें, स्थिरराशि नवांशमें जन्म हो तो अपने गृहमें जन्म कहना, राशि और नवांश इन दोनोंमें जो बली हो उसीसे फल कहना, परन्तु यह योग तब कहना, जब पूर्वोक्त योगोंका अभाव हो अर्थात् पूर्व कहेहुये योगोंमेंसे कोई योग न हो ॥ ३५ ॥

**मू०—आराऽर्कजयो स्त्रिकोणयोश्चन्द्रेऽस्ते च विसृज्यतेऽम्बया ॥ दृष्टेऽमरराजमन्त्रिणा दीर्घायुः सुखभाक् च स स्मृतः ॥ ३६ ॥**

भाषार्थः—मंगल, शनि यह दोनों त्रिकोण ९ । ५ स्थानमें स्थित हों, और चन्द्रमा सातवें घरमें हो तो उस समयका उत्पन्न बालक अपनी मातासे जुदा हो जावै तथा ऐसे योगमें चन्द्रमापर बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो माताका त्याग हुआभी बालक दीर्घ आयुवाला और सुखी होवै ॥ ३६ ॥

**मू०—पापेक्षिते तु हिमगावुदये कुजेऽस्ते त्य-**

क्तो विनश्यति कुजाऽर्कजयोस्तथाये ॥ सौम्ये ऽपि पश्यति तथाविधहस्तमेति सौम्येतरेषु परहस्तगतो ऽप्यनायुः ॥ ३७ ॥

भाषार्थः—लग्नमें चन्द्रमास्थित हो, और उसपर पापग्रहोंकी दृष्टि हो, मंगल सातवें घरमें हो, तो वह बालकमातासे त्याग कियाहुआ मृत्युको प्राप्त होवै, तथा लग्नमें स्थित चन्द्रमापरपापग्रहोंकी दृष्टि हो और मंगल शनि ग्यारहवें स्थानमेंहों तोभीपूर्वोक्त फल कहना यदि पूर्वयोग हो और शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो उसी ग्रहके वर्ण (ब्राह्मण आदि) के हाथमें वह बालक जावै और बहुत समयतक जीवै, तथा जो पापग्रह और शुभग्रह दोनो देखते हों, तो किसीके हाथ जाकर वह बालक मर जावै ॥ ३७ ॥

मू०— चतुर्थे कर्मणि सौम्याः सुखेन प्रसवंकराः ॥ त्रिकोणाऽस्तगते पापाः कष्टतः प्रसवंकराः ॥ ३८ ॥

भाषार्थः--जन्मसमय लग्नसे चौथे और दशवें स्थानमें शुभग्रहस्थित हों, तो सुखसे प्रसव होताहै अर्थात् सुखपूर्वक बालक उत्पन्न होताहै और त्रिकोण ९।५ स्थान और सातवें स्थान पापग्रह हों तो माताको बालक उत्पन्न होते समय बहुत कष्ट होताहै॥ ३८।

मू०—पितृमातृगृहेषुतद्बलात्तरुशालादिषु नीचगैः शुभैः ॥ यदि नैकगतैस्तु वीक्षितौ लग्नेन्दू विजने प्रसूयते ॥ ३९ ॥

भाषार्थः—जो पितासंज्ञक ग्रह ( सूर्य, शनि,) बली हों तो पिता वा पितासम्बन्धी ताऊ चाचा आदिके घर जन्म कहना और जो मातासंज्ञक ग्रह,( चन्द्र, शुक्र ) बली हों तो माता वा मातृसंज्ञक मौसी मामीके घर बालकका जन्म जानना, यदि शुभग्रह नीच राशिमें हों तो वृक्षमें वा वृक्षके वा तले वा काठके घरमें तथा पर्वतपर वा नदी के समीपमें जन्म कहना और लग्न, चन्द्रमाको कोईभी ग्रह न देखता हो तो बालकका जन्म निर्जन स्थानमें कहना, तथा लग्न, चन्द्रमाको अनेक

ग्रह देखते हों तो बहुतसे मनुष्यों के समुदायमें जन्म कहना ॥ ३९ ॥

मू०—मंदर्क्षांशे शशिनि हिबुके मन्ददृष्टेऽब्जगे वा तद्युक्ते वा तमसि शयने नीचसंस्थैश्च भूमौ ॥ यद्वद्राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोक्षस्तु तद्वत् पापैश्चन्द्रात्स्मरसुखगतैः क्लेशमाहुर्जनन्याः॥ ४० ॥

भाषार्थः—जो बालकके जन्मसमय चन्द्रमा शनैश्चरके राशि वा नवांशकमें हों वा चौथे स्थानमें स्थित चन्द्रमा शनि संयुक्त हो, तो अंधेरेमें जन्म कहना, यदि इन योगोंमें सूर्य बलवान् हो और मंगलकी दृष्टि हो तो सब योगोंका फल कटजाता है अर्थात् सब योग रहतेभी घरमें जन्मसमय दीपक कहना, अथवा चन्द्रमा लग्नमें वा चौथे नीच ( ८ राशि ) का हो तो पृथिवीपर जन्म कहना, तथा शीर्षोदयराशि जन्मलग्नमें हो तो जन्म होते समय बालकका मुख ऊपरको कहना; पृष्ठोदय लग्न हो तो पृथिवीकी ओरको अर्थात् नीचेको मुख कहना, और उभयोदयी अर्थात् मीनलग्न हो

तो बालकका जन्म तिरछा कहना, तथा लग्न व नवांश वा लग्नमें स्थितग्रह वक्री हो तो उलटे पैरसे बालकका जन्म कहना, और पापग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें वा चौथे स्थानमें हो तो जन्मसमय बालककी माताको कष्ट हुआ कहना ॥ ४० ॥

मू०—स्नेहः शशांकादुदयाच्च वर्तिर्दीपोऽर्कयुक्तर्क्षवशाच्चराद्यः ॥ द्वारश्च तद्वास्तुनि केन्द्रसंस्थैर्ज्ञेयं ग्रहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा ॥ ४१ ॥

भाषार्थः—चन्द्रमाकी राशिसे दीपकमेंका तैल कहना, सो रीति पूर्व कह चुके हैं और जन्मलग्नसे दीपककी बत्तीका विचार कहना, उसका क्रमभी पूर्व कह आये हैं और सूर्ययुक्त राशिके वशसे दीपकका विचार करना, तहां जिस राशिमें सूर्य हो उस राशिके समान तेलका रंग कहना, तथा वह राशि शुभग्रहसे युक्त हो तो तेल निर्मल और पापग्रहयुक्त हो तो तेल मलीन कहना, और केन्द्रमें जो ग्रह होवे, उसकी जो

दिशा हो उस ओरको सूतिकाके घरका द्वार कहना, अनेक ग्रह केन्द्रमें हों तो उनमेंसे जो ग्रह बली हो उस ग्रहकी दिशाका द्वारकहना ॥ ४१ ॥

मू०-लग्नेन्दुमध्ये शनिमिष्टतैलं सूर्ये भवेत्तस्य घृतस्य दीपम् ॥ शेषा ग्रहास्तत्कटुकं च तैलं एवं प्रसूतौ खलु दीपमाह ॥ ४२ ॥

भाषार्थः-लग्न और चन्द्रमाके मध्यमें शनि स्थित हो तो दीपकमें तेल मीठा कहना, सूर्य हो तो दीपकमें घी जानना और शेष ( मं. बु. बृ शु. ) हों तो कडुवा तेल कहना इस प्रकार प्रसूतिका स्त्रीके घरमें दीपकका तेल निश्चय करना ॥ ४२ ॥

मू०-जीर्णं संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ काष्ठाढयं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्पोद्भवम् ॥ रम्यं चित्रयुतं नवं च भृगुजे जीवे दृढं मन्दिरम् चक्रस्थैश्च यथोपदेशरचना सामन्त पूर्वावदेत ॥ ४३ ॥

भाषार्थः—जन्मसमयमें जो शनैश्चर बली हो तो प्रसूती स्त्रीका घर पुराना और अच्छा बना कहना, मंगल बलवान् हो तो दग्ध ( जलाहुआ ) कहना, चन्द्रमा हो तो नवीन अथवा लीपा पोता साफ कहना, सूर्य बलवान् हो तो कच्चा, काष्टसे भराहुआ, बुध, बली हो तो रमणीय कारीगरीसे बनाहुआ; शुक्र हो तो सुन्दर चित्रकारीसमेत नवीन जानना; बृहस्पति बली हो तो पुष्ट घर कहना, जिस ग्रहसे यह घरका विचार किया है, उसके निकट वा उसके आगे पीछे जितने ग्रह हों उतने कोठे उस घरमें आगे पीछे कहनी, यहां शालाका प्रमाण इस प्रकार कहना कि बृहस्पति उच्च वा दशम भावमें स्थित हो तो तीन चार कोठाका, घर कहना, तथा लग्नमें धनराशि बली हो तो तीन कोठाका द्विः स्वभावराशि बलवान् हो तो शालाका घर कहना, अपनी बुद्धिसे घरके निकट शिवालय, कुवाँ वृक्ष, आदि ग्रहोंके अनुसार वर्णन करना ॥ ४३ ॥

मू०—लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतग्रहतु-

स्यवपुर्वा ॥ चन्द्रसमेतनवांशपर्वणः कादिविलग्नविभक्तभगात्रः ॥ ४४ ॥

भाषार्थः—जन्मसमय लग्नमें जो नवांश हो उसके स्वामीके समान बालकका स्वरूप कहना, अथवा जो ग्रह बहुत बलवान् हो उनके समान शरीरका आकार कहना, ग्रहोंका स्वरूप आगे वर्णन करेंगे, चन्द्रमा जिस नवांशपर हो उसके स्वामीके सदृश बालकका रंग कहना 'रक्तश्यामो भास्करो, इत्यादि श्लोक आगे लिखेंगे वह ग्रह दीर्घराशिका स्वामी हो वा दीर्घराशिमें हो तो उस राशिके तुल्य अंग दीर्घ हो, वैसेही ऱ्हस्वमें ऱ्हस्व, मध्यमें मध्यम जानना ॥ ४४ ॥

ग्रहोंका वर्ण ॥ मू०—रक्तश्यामो भास्करोगौर इन्दुर्नात्युच्चाङ्गो रक्तगौरश्च वक्रः ॥ दूर्वाश्यामोज्ञोगुरुर्गौरगात्रः श्यामः शुक्रो भास्करिः कृष्णदेहः ॥ ४५ ॥

भाषार्थः—सूर्यका रक्तश्याम वर्ण, चन्द्रमाका गोरा

रंग, मंगलका कमल समान लाल और गोरा रंग, और शरीर छोटा, बुधका दूर्वाके दल समान रंग, बृहस्पतीका गोरा रंग, शुक्रका श्यामवर्ण अर्थात् न बहुत गोरा न काला, शनिश्चरका काला शरीर जानना ॥ ४५ ॥

ग्रहोंका रूप ॥ मू०—मधुपिंगलदृक् चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिः सविताऽल्पकचः ॥ तनुवृत्ततनुर्बहु वातकफः प्राज्ञश्च शशीमृदुवाक् शुभदृक् ॥ ४६ ॥

भाषार्थः—सूर्यका स्वरूप शहतके रंगके सदृश नेत्र और चौकोन शरीर, पित्त प्रकृति, छोटे २ और थोडे केश, ऐसा सूर्यका स्वरूपहै, चन्द्रमा शरीरसे दुबला, सब अंग गोल, वातपित्त प्रकृति, बुद्धिवान् और कोमल वाणी, सुन्दर मनोहर नेत्रवाला है ऐसा स्वरूप जानना ॥ ४६ ॥

मू०—क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरुदारः पैत्तिकः सुचपलः कृशमध्यः ॥ क्लिष्टवाक् सततहास्यरुचिर्ज्ञः पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च ॥ ४७ ॥

भाषार्थः—क्रूर दृष्टि, नित्य युवा अवस्था, उदार चित्त पित्त प्रकृति, चंचल स्वभाव, बीचका अंग दुबला अर्थात् पतला, ऐसा मंगलका स्वरूप है और बुधका स्वरूप सुन्दर, गद्गदवाणी, वारम्वार हँसनेवाला, मसखरा, वात पित्त कफ प्रकृतिवाला जानना ॥ ४७ ॥

मू०—बृहत्तनुः पिंगलमूर्द्धजेक्षणो बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः॥ भृगुः सुखीकान्तवपुः सुलोचनः कफानिलात्मा सितवक्रमूर्द्धजः॥४८॥

भाषार्थः—बहुत लम्बा शरीर, और लम्बे लम्बे केश भूरे नेत्र, उत्तम बुद्धि, कफ प्रकृति, ऐसा बृहस्पतिका स्वरूप है, और शुक्रका स्वरूप सुखी, सुन्दर कान्तिवाला शरीर, दर्शन योग्य नेत्र, कफ वात प्रकृति, टेढे व सपेद शिरके बाल ऐसा जानना ॥ ४८ ॥

मू०—मन्दोऽलसः कपिलःकृशदीर्घगात्रः स्थूलद्विजः परुषरोमकचोऽनिलात्मा ॥ स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथ शुक्रवसा चमज्जा मन्दाऽर्कच-न्द्रबुधशुक्रसुरेज्यभौमाः ॥ ४९ ॥

भाषार्थः—शनैश्चरका स्वरूप, आलसी, कुंजे नेत्र, दुबला और ऊँचा शरीर, नाक और दांत मोटे, रूखे केश, वातप्रकृतिवाला कहाहै, अब ग्रहोंकी धातु वर्णन करतेहैं, शनिकी धातु नस, सूर्यकी धातु हड्डी, चन्द्रमाकी धातु रुधिर, बुधकी त्वचा, शुक्रकी वीर्य, बृहस्पतिकी मेदा, मंगलकी धातु मज्जा जानना ॥ ४९ ॥

मू०—कंदृक्श्रोत्रनसाकपोलहनवोवक्रं च होरादयस्ते कंठांशकबाहुपार्श्वहृदयं क्रोडानि नाभिस्ततः ॥ बस्तिः शिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरूततो जानुनी जंघेंघ्रीत्युभयत्र वाममुदितैर्द्रेष्काण भागैस्त्रिधा ॥ ५० ॥

भाषार्थः—जन्मलग्नके द्रेष्काणवसे तीन भागोंमें चिन्ह आदि होतेहैं, जो लग्नका पहला द्रेष्काण हो तो लग्नशिर, दूसरा, बारहवां घर दोनों नेत्र, तीसरा, ग्यारहवां घर दोनों कान, चौथा दशवां घर दोनों नासिका, पांचवां नवां घर दोनों गाल, छठा आठवां स्थान ठोढी, सातवां घर मुख कहिये, और लग्नका, दूसरा

द्रेष्काण हो तो लग्नकंठ, दूसरा बारहवां घर दोनों कन्धे, तीसरा ग्यारहवां घर दोनों बाहु, चौथा दशवां घर दोनों बगल, पांचवा नवां घर हृदय, छठा आठवांघर पेट, सातवां घर नाभि, तथा लग्नका तीसरा द्रेष्काण हो तो लग्नबस्ति कहिये पेडू, दूसरा बारहवां घर लिंग और गुदा, तीसरा ग्यारहवां घर वृषण ( अंडकोश ) चौंथा दशवां घर ऊरू, पांचवा नवां घर जानु, छठा आठवां स्थान घुटना, सातवां घर चरण जानना, यहां लग्नसे सातवें घरके आधे भावपर्यंत बायां अंग जानना और सप्तमार्धसे बारहवें भावपर्यन्त दहिना अंग जानना ॥ ५० ॥

मू०-तस्मिन्पापयुते व्रणं शुभयुते दृष्टं च लक्ष्मादिशेत्स्वर्क्षांशे स्थिरसंयुतेषु सहजः स्यादन्यथाऽऽगन्तुकः ॥ मन्देश्माऽनिलजोऽग्निशस्त्रविषजो भौमे बुधे भूभुवः सूर्ये काष्ठचतुष्पदेषुहिमगौ श्रृंग्यब्जजोऽन्यैः शुभम् ॥ ५१ ॥

भाषार्थः-पूर्वोक्त द्रेष्काणके विभागसे अंगोंको जा-

नकर जिस राशिमें पापग्रह होवै जिस राशिपर पापग्रह स्थित हों वहां व्रण (फोड़ा, फुंसी, घाव,) कहना, और शुभग्रहयुक्त हो वा शुभग्रह देखते हों, तो चिन्ह आदि कहना चिन्ह कहनेसे लशुन, तिल, मस्सा, आदि कहना, तथा व्रण व चिन्ह करनेवाला ग्रह अपनी राशि, अपने नवांश, वा स्थिर राशिमें हो तो जन्महीसे चिन्ह कहना, इससे अन्यथा हो अर्थात् चरराशिनवांशमें हो तो वह पीछेसे चिन्ह होगा, जो शनि व्रण करनेवाला हो, तो पत्थर वा वायु वा अग्नि द्वारा चिन्ह कहना, मंगल हो तो अग्नि, हथियार व विषद्वारा चिन्ह कहना, बुध हो तो पृथिवीपर गिरकर व्रण हो जावै,सूर्य हो तो काठकी चोट सेवा किसी चौपाये पशुसे व्रण कहना, चन्द्रमा हो तो सींगवाले पशुसे, वा जलचर जीवसे व्रण आदि कहना अन्य ग्रह शुभ जानना, व्रण करनेवाले नहीं जानना ॥ ५१ ॥

मू०–समनुपतिता यस्मिन्भागे त्रयः सबुधा ग्रहा भवति नियमात्तस्यावाप्तिः शुभेष्वशुभे-

ऽपिवा ॥ व्रणकृदशुभः षष्ठे देहे तनोर्भसमाश्रिते
तिलमशककैर्दृष्टः सौम्यैर्युतश्च स लक्ष्मवान् ५२॥

भाषार्थः-जिस भागमें बुध सहित तीन ग्रह स्थित हों, उस अंगमें शुभ अशुभ चिन्ह अवश्य होताहै, उन ग्रहोंमें जो ग्रह अधिक बलवान् हो उसकी दशामें चिन्ह वा व्रण जानना छठे घरमें जो पाप ग्रह हो तो देहमें तो शीर्ष मुख बाहु इत्यादि चक्र पूर्व लिख चुकेहैं उस क्रमसे व्रण आदिकहना, पापग्रह जो शुभग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो लहसन आदि चिन्ह करनेवाला जानना ॥ ५२ ॥

मू०-दशमे बुधजीवौ च सूर्यभौमौ च कंटके ॥ तृतीयैकादशे पापे बालकस्यषडङ्गुली५३॥

भाषार्थः-दशवें घरमें बुध बृहस्पति हो, केन्द्र १ ४।७।१० में सूर्य और मंगल हो तीसरे ग्यारहवें घरमें पापग्रह हो, तो बालककी छः अंगुली कहना ॥ ५३ ॥

मू०-द्वादशे चन्द्रभौमौ वा वामनेत्रं विन-

श्यति ॥ द्वादशे रविराहू च दक्षचक्षुर्विनाशयेत् ॥ ५४ ॥

भाषार्थः—बारहवें घरमें चन्द्रमा वा मंगल हो तो बायां नेत्र विनाश करताहै और बारहवें स्थानमें सूर्य व राहु हो तो दहिना नेत्र विनाश होवै ॥ ५४ ॥

मू०—अर्कसुतः कुजो राहुः पञ्चमस्थः प्रसूतये ॥ लशुनं वामकुक्ष्यां च गर्गाचार्येण भाषितम् ॥ ५५ ॥

भाषार्थः—शनि, मंगल, राहु ये ग्रह जन्मसमयमें पांचवें स्थानमें हो तो बायें कोखमें लशुन कहना, ऐसा गर्गाचार्यने कहाहै ॥ ५५ ॥

मू०—सिंहलग्ने यदा जातो यामित्रे च शनैश्चरः ॥ ब्रह्मपुत्रोऽपि संजातो म्लेच्छो भवति बालकः ॥ ५६ ॥

भाषार्थः—जो सिंह लग्नमें जन्म हो और सातवें स्थानमें शनि हो, तो ब्राह्मणके घरमें जन्म होनेपरभी वह बालक म्लेच्छ हो जाताहै ॥ ५६ ॥

मू०-सहजस्थो यदा शुक्रः सिंहे मेषे बृहस्पतिः ॥ दशमे रविभौमौ च मूको भवति बालकः ॥ ५७ ॥

भाषार्थः-तीसरे स्थानमें जो शुक्र हो, सिंह वा मेषका बृहस्पति हो, दशवें घरमें सूर्य, मंगल हो तो बालक मूक ( गूँगा ) हो जाताहै ॥ ५७ ॥

मू०-सुतमदननवान्त्यरन्ध्रलग्नेष्वशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः ॥ भृगुसुतशशिपुत्रवेदपूज्यैर्यदि बलिभिर्न विलोकितो युतो वा ॥ ५८ ॥

भाषार्थः-पांचवें, सातवें, नवें बारहवें, आठवें,लग्नमें इन स्थानोंमेंसे किसी स्थानमें पापग्रहयुक्त क्षीण चन्द्रमा हो और चन्द्रमाको बलवान् शुक्र, बुध, बृहस्पति इनमेंसे कोई शुभ ग्रह न देखताहो, तो वह बालक मर जावे ॥ ५८ ॥

मू०-कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि ॥ षष्ठाष्टमे भवेच्चन्द्रः सर्वा रिष्टं निवारयेत् ॥५९ ॥

भाषार्थः—जो कृष्णपक्षमें दिनको और शुक्ल पक्षमें रात्रिको जन्म हो और छठे आठवें स्थानमें चन्द्रमा हो तो सब प्रकारके अरिष्टोंको निवारण करै ॥ ५९ ॥

मू०—चन्द्राष्टमं च धरणीसुतसप्तमं च राहुर्नवं च शनिजन्म गुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्तु पंच भृगुषष्ठ बुधश्चतुर्थे जातो न जीवति नरः प्रवदन्ति सन्तः ॥ ६० ॥

भाषार्थः—चन्द्रमा आठवें स्थानमें हो और मंगल सातवें हो, राहु नवम घरमें हो, शनि लग्नमें हो, बृहस्पति तीसरे घरमें हो सूर्य पांचवें, शुक्र छठे बुध चौथे हो तो बालक नहीं जीवै, ऐसा पूर्व आचार्य वर्णन करते हैं ॥ ६० ॥

मू०—लग्ने शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ॥ दशमोङ्गारको नैव स जातः किं करिष्यति ॥ ६१ ॥

भाषार्थः—जिसके जन्मकालमें लग्नविषे बुध शुक्रन

हों, और केन्द्रमें बृहस्पति नहीं हो एवं दशम स्थानमें मंगल न हो तो वह बालक क्या करैगा ? अर्थात् उसका जन्म निरर्थ जानना ॥ ६१ ॥

मू०—मुर्तौ शुक्रबुधा यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ॥ दशमोङ्गारको यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥ ६२ ॥

भाषार्थः—जिसके जन्म समय शुक्र बुध मूर्तिमें हों और केन्द्र १।४।७।१० में बृहस्पति हो, तथा जिसके दशवें घरमें मंगल हो, उस बालकको अपने कुलमें दीपक समान जानना ॥ ६२ ॥

मू०—लग्नस्थाने यदा सौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ॥ कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ ६३ ॥

भाषार्थः—लग्नस्थानमें जो शनि हो, छठे स्थानमें चन्द्रमा हो और सातवें स्थानमें मंगल हो; उसका पिता नहीं जीवै ॥ ६३ ॥

मू०—षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत्॥
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः॥ ६४॥

भाषार्थः—जो छठे और बारहवें घरमें पापग्रह हो, तो माताको अरिष्ट जानना, चौथे, दशवें स्थानमें पापग्रह हो तो पिताको अरिष्ट जानना॥ ६४॥

मू०—दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रस्थितो यदि॥ म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः॥ ६५॥

भाषार्थः—दशम स्थानमें जो मंगल हो और शत्रुकी राशिमें हो तो उस बालकका पिता शीघ्र मरजावै इसमें संशय नहीं करना॥ ६५॥

मू०—लग्ने जीवो धने मन्दो रविर्भौमस्तथा बुधः॥
विवाहसमये तस्य बालस्य म्रियते पिता॥ ६६॥

भाषार्थः—लग्नमें बृहस्पति, दूसरे स्थानमें शनि, सूर्य, मंगल तथा बुध हों तो उस बालकके विवाहसमयमें उसका पिता मर जावै॥ ६६॥

मू०—पातालस्थो यदा राहुश्चेन्दुः षष्ठाष्टमेऽपि च ॥ पापदृष्टोऽपि शेषेण सद्यः प्राणहरः शिशोः ॥ ६७ ॥

भाषार्थः—जो पाताल ( सातवें ) स्थानमें राहु हो और छठे, आठवें घर चन्द्रमा हो; शेष ग्रहोंकी पाप दृष्टि हो तो बालकका प्राण शीघ्र हरजावै ॥ ६७ ॥

मू०—जन्मलग्ने यदा राहुः षष्ठो भवति चन्द्रमाः ॥ जातो मृत्युमवाप्नोति कुदृष्ट्यां त्वपमृत्युना ॥ ६८ ॥



भाषार्थः—जो जन्मलग्नमें राहु हो और छठे स्थानमें चन्द्रमा हो, जन्म लग्नपर किसी ग्रहकी कुदृष्टि हो तो अकालमृत्यु होवै ॥ ६८ ॥

मू०—सिंहलग्ने यदा भौमःपंचमे च निशाकरः ॥ व्ययस्थाने यदा राहुस्सजातःकुलदीपकः ॥६९॥

भाषार्थः—सिंहलग्नमें जो मंगल हो और पांचवें चन्द्रमा हो, बारहवें राहु हो, तो वह बालक अपने कुलमें दीपक होवै ॥ ६९ ॥

मू०—लग्ने वा सप्तमे भौमः पंचमे च दिवा-
करः ॥ व्ययस्थाने यदा राहुर्विख्यातः स न
संशयः ॥ ७० ॥

भाषार्थः—लग्नमें वा सातवें मंगल हो और पांचवें, सूर्य हो और जो बारहवें राहु हो, तो वह बालक निस्सन्देह जगतमें प्रसिद्ध मनुष्य होवै ॥ ७० ॥

मू०—त्रिभिः स्वस्थैर्भवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नरा-
धिपः ॥ त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तगैर्त-
र्जडः ॥ ७१ ॥

भाषार्थः—जो बालकके जन्मसमय तीन ग्रह अपने घरमें स्थित हों, तो वह बालक मंत्री हो, और तीन ग्रह उच्चके हों तो राजा, और तीन ग्रह नीचके हों तो दास हो, तीन ग्रह अस्त हों तो वह बालक जड ( मूर्ख ) होवै ॥ ७१ ॥

मू०—शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा

शनिः ॥ वर्षे च द्वादशे मृत्युर्दैवो वै रक्षिता-
यदि ॥ ७२ ॥

भाषार्थः—जो शनिके घरमें सूर्य हो, सूर्यके घरमें शनि हो, तो बारहवें वर्षमें,देवसे रक्षितभी बालक मर-जावै ॥ ७२ ॥

मू०—जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ॥
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शंकरः ॥ ७३ ॥

भाषार्थः—जो जन्मलग्नमें मंगल हो और आठवें घरमें बृहस्पति हो, तो बारहवें वर्षमें यदि महादेवभी रक्षा करै तोभी बालक मृत्युको प्राप्त होजावै ॥ ७३॥

मू०—षष्ठाष्टमस्तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा
बुधः ॥ चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शङ्करः॥७४॥

भाषार्थः—जो जन्मसमय छठे, आठवें तथा मूर्तिमें बुध हो तो यदि शंकरभी रक्षा करैं तोभी चौथे वर्षमें वह बालक मरजावै ॥ ७४ ॥

मू०—भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टासु च

चन्द्रमाः ॥ अष्टवर्षेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥ ७५ ॥

भाषार्थः–जो मंगलके घरमें बृहस्पति हो और छठे, आठवें स्थानमें चन्द्रमा हो, तो ईश्वरसे रक्षितभी बालक आठवें वर्षमें मरजावै ॥ ७५ ॥

मू०–दशमोऽपि यदाराहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् ॥ वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥७६॥

भाषार्थः–जन्मसमय दशवें घरमें राहु होवै तो बालककी सोलहवें वर्षमें मृत्यु जानना, ऐसा पण्डितोंने कहा है ॥ ७६ ॥

मू०–अग्रजातं रविर्हन्ति पृष्ठजातं शनैश्चरः ॥ जातं जातं कुजो हन्ति सहजस्थो भवेद्यदि ॥७७॥

भाषार्थः–तीसरे स्थानमें स्थित सूर्य बडे भाईको नाश करताहै और तीसरे स्थानमें स्थित शनैश्चर उसके पीठपरके भाईको और मंगल तीसरे स्थानमें हो तो उसके पीठपर जो बालक उत्पन्न हो जाय वह नाश होता जावै ॥ ७७ ॥

मू०—इनांकार्क्षांत्तातः शशिसुखगृहान्मातृकथितः कुजाद्भ्रातृस्थानात्सहज इनपुत्राष्टमगृहात् ॥ मृतिर्ज्ञात्षष्ठे स्याद्रुज इति क्रमान्मातुलमपि गुरौ पुत्रात्पुत्रो सितसदनभाद्दारफलजम् ॥ ७८ ॥

भाषार्थः—यहां ग्रहोंसे ग्रहोंका फल कहतेहैं, सूर्यसे नवम स्थानद्वारा पितासम्बन्धी शुभाशुभ फल विचार करना, चन्द्रमासे चौथे भावद्वारा मातासम्बन्धी विचार करना, मंगलसे तीसरे स्थानद्वारा भाईका विचार करना, शनिसे आठवें स्थानद्वारा मृत्युका विचार करना, बुधसे छठे स्थानद्वारा रोग और मामाका विचार करना, बृहस्पतिसे पांचवें स्थानद्वारा पुत्रसम्बन्धी शुभाशुभ विचार करना, शुक्रसे सातवें स्थानद्वारा स्त्रीका शुभाशुभ फल विचारना ॥ ७८ ॥



मू०—यद्भावनाथो रिपुरन्ध्ररिष्फे दुःस्थानपो यद्भवनस्थितो वा ॥ तद्भावनाशं कथयन्ति

तज्ज्ञाः शुभेक्षिते तद्भवनस्य सौख्यम् ॥ ७९ ॥

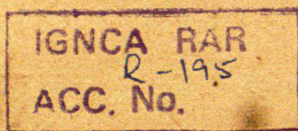
भाषार्थः—जिस भाव ( स्थान ) का स्वामी ६।८।१२ घरमें हो अथवा दुष्टस्थान ६।८।१२ का स्वामी जिस घरमें हो, उस भावफलका नाश कहना, जो शुभ ग्रहोंकी दृष्टि उस भावमें हो तो उस भावके सुख को करै ॥ ७८ ॥

मू०—यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वास्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः ॥ पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्दिष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥ ८० ॥

भाषार्थः—जिस जिस भावका स्वामी शुभग्रह अपने स्थानको देखता हो अपने स्थानमें स्थित हो, तो उस२ भावकी वृद्धि करता है, एवं जिस जिस भावका स्वामी पापग्रह हो और उस २ भावको देखता हो अथवा उस भावमें स्थित हो तो उस२ भावकी हानि करताहै, यह प्रश्नसमय अथवा जन्मसमयमें देखना ॥ ८० ॥

नोट–यह ग्रन्थ समस्त ज्योतिर्वित्पंडितोंको कण्ठस्थ रखना चाहिये, इसमें अत्यन्त सूक्ष्म २ विचार लिखदिया है, सो अपनी बुद्धिसे अच्छे प्रकारसे सोच विचारकर फल कहना, पीछेके तीन श्लोकोंके द्वारा जन्मसमय वा प्रश्नसमयमें पूर्णफल कहा जा सकता है, अधिक क्या कहाजाय अभ्यास और बुद्धिकी सर्वत्र आवश्यकता है.

इति श्रीबांसबेरली तथा लखीमपुरस्थ संस्कृत-
पुस्तकालय स्वामि पण्डित नारायण
प्रसाद मुकुन्दरामाभ्यांविलिखितं
भाषान्वितं लग्नजातकं
समाप्तम् ॥



## बालकोपयोगी पुस्तकें.

१ हिन्दीकी प्रथम पुस्तक—यह बालकोंके लिये ऐसी उत्तम है कि बालक सहजमें विद्याभ्यास कर सफलता कर सकेंगे मूल्य ३ आना.

२ शिक्षाभूषण—हिन्दी भाषाके जाननेवाले महाशयोंको अंगरेजी पढनेका सीधा उपाय इसीमें पायागयाहै पुस्तक ऐसे ढंगसे बनाई गई है कि बिनागुरूके अंगरेजी थोडे दिनमें अभ्यासकर अपना काम पूरे तौरसे करसकें मू. २)

३ बालोपदेश—इसके पढनेसे बालकोंकी बुद्धि और चतुराई बढती है और नानाप्रकारके उपदेशोंसे सुमार्गमें तत्पर रहेंगे इसमें ५२कहानियां चित्रसहित हैं मू० ३आना.

४ बालचित्रबोध—इसके चित्र देख २ कर बालक हंसहंसकर विद्या पढनेमें अति प्रसन्न रहते हैं मू० १॥ आना.

५ हमारे कार्यालयमें अनेक प्रकारके पुस्तक विक्रियार्थ मौजूद रहतेहैं जिनमहाशयोंको सर्व पुस्तकोंका मूल्य जाननेकी इच्छा हो सो आधआनेका टिकट भेजकर सूचीपत्र विना मूल्यसे मंगाकर देखें.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

**पं० श्रीधर शिवलालजी.**

**"ज्ञानसागर" छापखाना. ( बम्बई. )**